

प्रभुदास पटेलनी वार्ता 'भाभी ज़वडां' प्रगटती ग्रामयेतना

हितेशकुमार विनोदयंद्र मोदी

आसी. प्रोफ़ेसर, सरकारी विनयन अने वाणिज्य कोलेज, गांभोछ, साबरकांठ

आनर्त प्रदेश उत्तर गुजरातमां साबरकांठाना विजयनगर तालुकांना राजपुर गांमे तारीख १-५-१९५४ना रोज आंजण्णा पटेल परिवारमां प्रभुदास पटेलनो जन्म थयो हतो. तेमनो जन्म, उछेर अने वर्तमान ज़वन अति अंतरियाण-पर्वतीय आदिवासी विस्तारमां थयो छे.

तेमनुं समग्र ज़वन पर्वतीय विस्तार येवा विजयनगरनी आसपास ज़ विकस्युं छे. आ दुंगराण पंथकमां मोटाभागनी वस्ती आदिवासीओनी होछ आदिवासी मित्रो-स्वजनो वय्ये ज़ ज़व्या छे. शिक्षण्णी मांडीने अन्य प्रवृत्तियो आदिवासी ग्रामीण मित्रो वय्ये संपन्न थछ छे. ज़वन अनुभवनी आ मोछी मूडीनी लोय पर साहित्य सर्जन थयुं छे. प्रभुदास पटेलये 'वन्यराग' अने ' देवकली ' येम वार्तासंग्रह आध्या छे. सर्जक पोते ज़यां जन्म्या-विकस्या ते उत्तर गुजरातना विजयनगर तालुकांना ग्रामीण आदिवासी परिवेश तेमनी वार्ताओमां छे.

प्रभुदास पटेलना वार्तासंग्रह 'वन्यराग' नी येक वार्ता 'भाभी ज़वडां' प्रगटती ग्रामयेतना जोछये.

परभुनुं अकाणे अवसान थतां विधवा बनेली शनुना शेषज़वन अंगेनी मनोमूंठवण पीडा 'भाभी ज़वडां' वार्तामां व्यक्त थछ छे. गलाकाकाये मा-बाप विनाना थंछुने दीकरानी ज़म ज़ मोटो क्यो, परभुनी साथे. पण गोलारांये परभुने दाउ पाछने मारी नांभेला अने ये शनुने पामवा माटे शनुना कुटुंबीओ साथे माथाडूट करतो होय छे. ये वेणाये तीव्र मनोव्यथा अनुभवती विधवा शनु ताबे थवाने बढले विद्रोह करी महाकाणीना आग उरता बिहामण्णा रुपमां बधा पुरुषोने लगावे छे.

आदिवासी लोकोमां स्त्री विधवा थाय तयारे कुटुंबीओ छेडागांठ-नोतडुं करे छे ये रिवाज व्यक्त थयो छे.^१

“आजे कुटुंबीओ छेडागांठ करवा बेठा स एम ? मारी छेडागांठ ? नातरुं ? ने छये छ गोलारां हंगात्ये ? हय, अटला हाट ज़ कानकुसियां ! पां...ण मने पूर्या वना? ज़ल्लानुं तो मारे से के छयांय ? थ्युं कोम दूबणीने पाटुं मेलवा तियार थ्यां, अशे ? मे तो येक वार छेडागांठ करी ये करी वारे वारे थ्येनी ? ओ धरती माछ.”

शनुने छेडागांठ करवी नथी परंतु त्यां बधा कुटुंबोमां आवुं ज़ होय छे.^२ -

“शनु, कुटुंबीओ तो हत्तेय येवा ज़ ! ' पेदी हवलीनो ज़ वयार करने! कटम्बे तो छने छना ज़ देवर हंगात्ये गांगरता छीटनी पेठम पलाणी दीघेली. छने कटम्बे कयां पूश्युं तुं ? ने छना पूठेनी हवलीनी गत्य तो तुं ये कया नथ्य ज़ाएती ? ”

कुटुंबना बैरां पण शनुने समजवतां विधवा स्त्रीने बीजे वस्तार मांडवा समजोवे छे.^३ -

“बाछ, आपडो ते कांटा अवतार से? ना, ना, आपडाथी आदमी पेठम कांय येकलां ज़वाय ? के'जो अरे भुन, बावणियांना हूँठा पेठम तो दा'डा वणता अशे वणी ? धरमां काकाछ लछ ने कांय ओछो पारको के'वाय ? ”

मेणो अने धरतीमातानो संदर्भ पण ज़ओ^४ -

“मेणामांथी भागी छूटया पछी पहेल-वहेलो परभु तेने धरतीमाताना थानके लछ आवेलो. ने पछी 'येछ' मा' पेल पेल्लां तारा ज़ दुवारे आयां शीये. रभवाणां करजो मा ! ”

‘येछ' मा! परभु हंगात्ये ज़लमोज़लम रे'वानुं हय...छेजो.”

शनुनी बढलावेली स्थिति जोतां बैरामां सणसणाटी मची-“कोछ सूकां मरयां...कोछ देवता.. तो कोछ वणी अगारबत्ती.. येक तरङ्ग शनुना वणगाडनो उपयार थछ रखी' तो.”

आ लोकोमां मामेराना प्रसंगनुं महत्त्व भूय.^५

“गाममां नानां-जुवानियां- आघेड उंमरना ने घरडां-बधांय ट्रेक्टरमां छलोछल लराछ गयेलां. झेछने त्यां मामेडुं लछ जवानुं टाणुं अेटले कौताना आनंछने थनगनाटनुं तो पूछवानुं ज शुं होय ? ”

अने ट्रेक्टर झेछना मकाननी डुंगरी नीये ठोणुं ज रह्युं के यार पांय स्त्रीये वधामणीना गीतो गातां गातां आवी गयेली. मामेडुं पत्युं ज के वडीलो तो मामेरियाओने मणेलो बोकुरियो (बकरो) वेतरवामां तो जुवानिया नाय-गानमां अेकतान बनी गयेला.

धरतीमाता अने डुंगरीओ प्रत्येनो प्रेम जुओ ° -

“बे ज वर्षमां गाम केवुं अजाख्युं बनी गयेलुं ? जाणे बधुंय ठोणुं यत्तु ना थछ गयुं होय ? ना, ना, धरतीमातानो डुंगर तो अेना अे ज हतो. ने नानी नानी डुंगरीओ परनां भोलरां ? डुंगरियो, डुंगरदादानी छेडीओ जोणे छोराने रमाडती बेठी न होय ! अे बधुं तो सलामत ज हतु.”

होणी उत्सव धामधूमथी उजवाय ° -

“मुभीबाबाअे हूणी (होणी) बाणतां स ‘धमाधम’, ‘धमाधम’ ढेल वागता’ता ने बैरां हूणीबाछना गीतो गाता’ता.”

आदिवासी बोलीना केटलाक नमूना जुओ -

‘अे दहाडानी कौता... कुदरते जाणे लाल लाल शरममांथी ज घडी न होय !’ °

‘पेली कव्वतमां नथी कयुं के बैरुं वोंय क बायणु अणुं- बेय बराबरनां ! उछडे तैस भबर पडे.’ °

आदिवासी समाजमां विधवा स्त्रीनी पीडा तेनो विद्रोह करती आ वार्ता संदर्ले प्रा.भरत महेता योग्य कहे छे. -

“ ‘उजास’नी माइक आ वार्तामां पण आदिवासी समाजना विधिविधानो छे.आदिवासी समाज घणी बधी बाबतोमां मोकणो होवा छतां विधवा स्त्री साथे ञटपटो त्यां पण छे छतां स्त्री लर वगीय स्त्री जेटली मूकनायिका नथी विद्रोह करे छे.”

पादटीप

- [1] पटेल, प्रभुदास, ‘वन्यराग’, प्रथम आवृत्ति, २०१४, पृष्ठ- ३८, अमदावाड : पाश्च पब्लिकेशन्स
- [2] अेजन (पृष्ठ-४०)
- [3] अेजन (पृष्ठ-४०-४१)
- [4] अेजन (पृष्ठ-४७)
- [5] अेजन (पृष्ठ-४८)
- [6] अेजन (पृष्ठ-५२)
- [7] अेजन (पृष्ठ-४७)
- [8] अेजन (पृष्ठ-४८)
- [9] अेजन (पृष्ठ-५२)

संदर्भ साहित्य

- [1] व्यास, योगेन्द्र, बोली विज्ञान अने गुजराती बोलीओ, यतुर्थ आवृत्ति, २०१०
- [2] सेदाणी, हसुमतीबेन, गुजरातनी लोक संस्कृति, अगियारमी आवृत्ति, २०२१
- [3] सोढा, गणपत, अनुआधुनिक ग्रामयेतानाकेन्द्री वार्ताओ, प्रथम आवृत्ति, २०१८